कविता- मत बांटों इंसान को (शाहबाज़ खान)

मंदिर-मस्जिद-गिरिजाघर ने
बांट लिया इंसान को
धरती बांटी, सागर बांटा
मत बांटों इंसान को।
अभी राह तो शुरू हुई है
मंजिल बैठी दूर है
उजियाला महलों में बंदी
हर दीपक मजबूर है।
मिला न सूरज का संदेशा
हर घाटी मैदान को।
धरती बांटी, सागर बांटा
मत बांटों इसान को।
अब भी हरी भरी धरती है
ऊपर नील वितान है
पर न प्यार हो तो जग सूना
जलता रेगिस्तान है।
अभी प्यार का जल देना है
हर प्यासी चटटान को
धरती बांटी, सागर बांटा
मत बांटों इंसान को।
साथ उठें सब तो पहरा हों
सूरज का हर द्वार पर

हर उदास आंगन का हक हो
खिलती हुई बहार पर।
रौंद न पाएगा फिर कोई

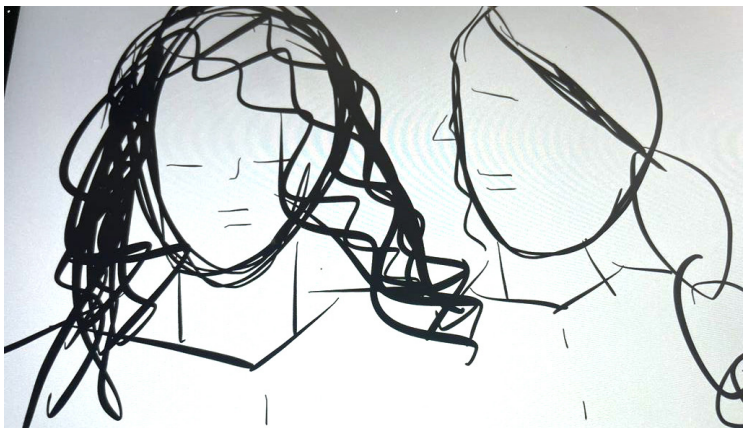

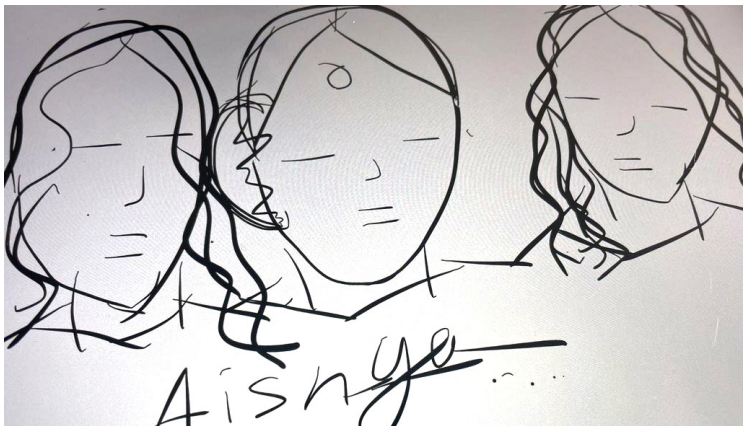

Courtesy: Ashwarya

मौसम की मुस्कान को।

धरती बांटी, सागर बांटा
मत बांटों इंसान को।

मेरा सपना (नाजनी)

मेरा नाम नाजनी हैं। मैं सराय काले खान में रहती हूँ। में आपको अपने सपने के बारे में बताना चाहती हूँ।

मेरी उम्र 16 साल की हैं और मैं कभी स्कूल नहीं गई। मैं घर में ही पीस बनाने का काम करती हूँ। और घरो में काम करने भी जाती हू। मुझे लगा मेरा जीवन ऐसे ही बीत जाएगा लेकिन जब से मेने BUDS सेंटर में आना शुरू किया हैं तब से मेरा जीवन और मेरी सोच बिलकुल बदल गई हैं। क्यूंकि मुझे यह नहीं पता था की मैं बिना स्कूल गए भी पढ़ सकती हूँ।

बचपन से मेरा यह सपना था की मैं पुलिस बनूँ । लेकिन मैं यह उम्मीद छोड़ चुकी थी। लेकिन जब से पेस सेंटर से जुड़ी हूँ तब से मुझे यह यकीन हो गया हैं की मैं जल्द ही अपना सपना पूरा करुँगी। क्यूंकि मेरे माता पिता ने भी मुझे यंहा इसीलिए भेजा हैं कि मैं अपना अधूरा सपना पूरा कर सकती हूँ।

Courtesy: Ashwarya